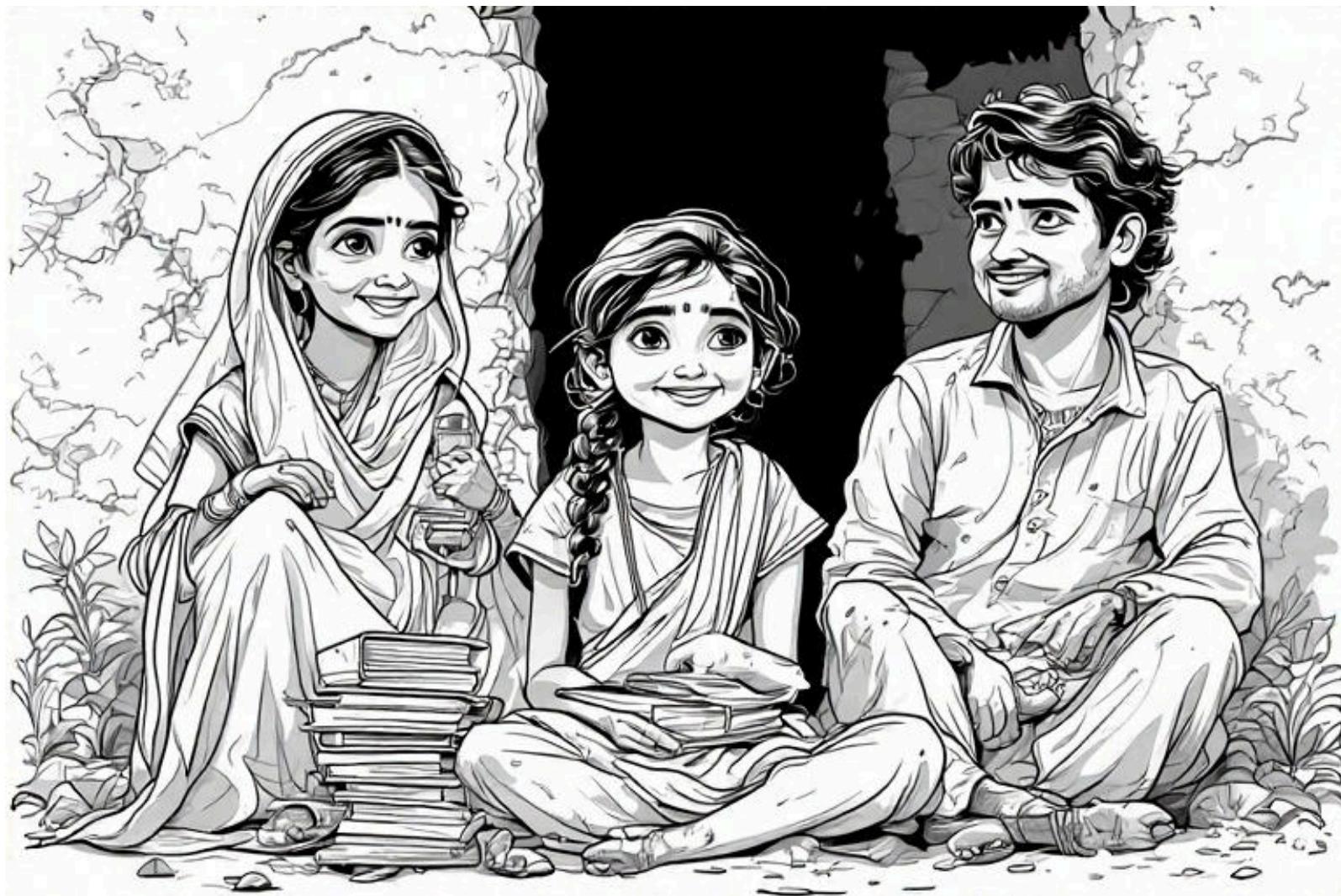


बेटियै बोज ना औन्दि



Bangani

बेटियै बोज ना औन्दि

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

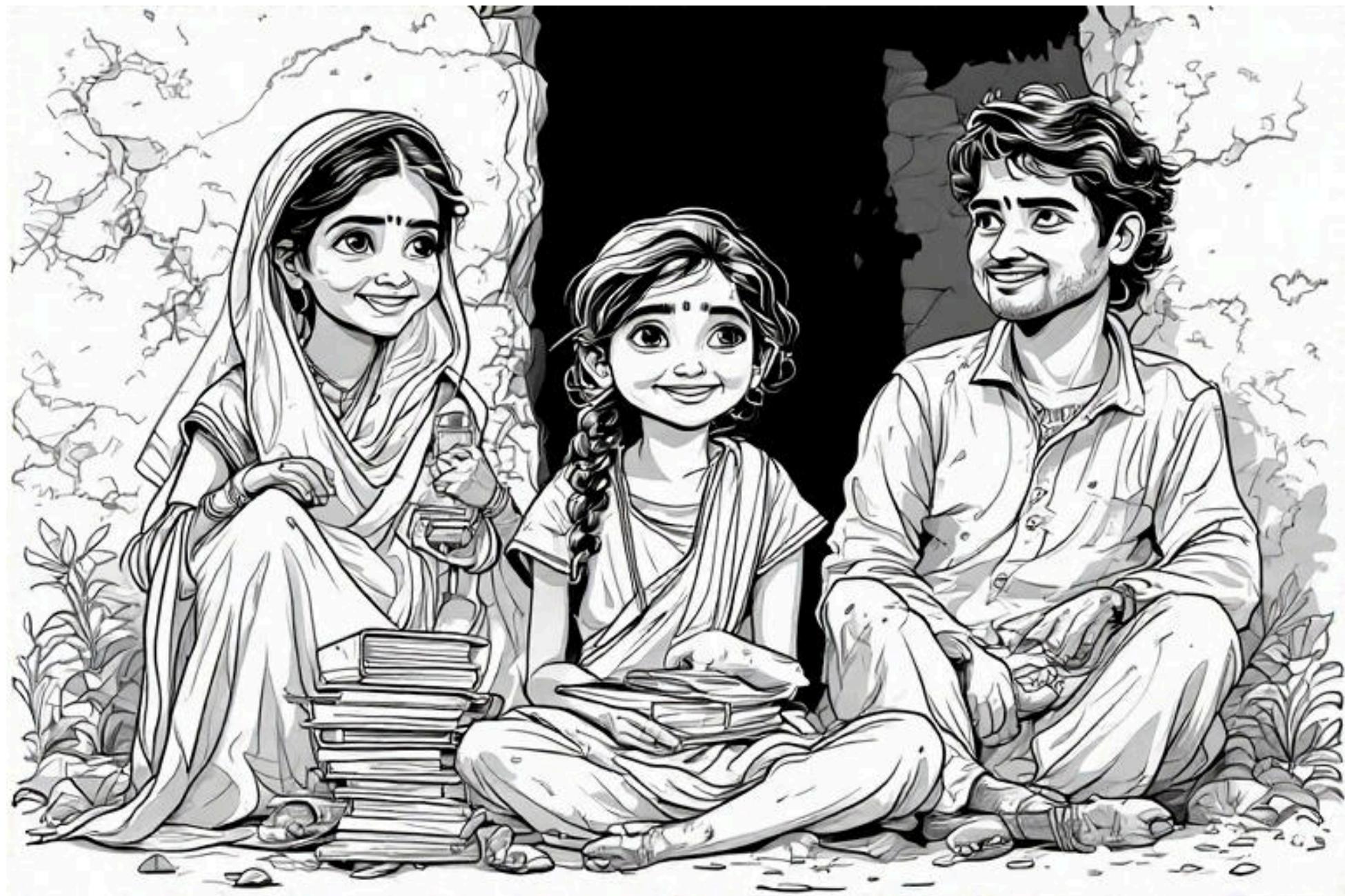
Big book in Bangani language
Community based Book

प्रकाशण:-
NLCI
बंगाणी मसी समिति समू

दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बढ़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकि जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

॥धन्यवाद ॥



एक गाउँ दि सविता नौऊँ री एक
लौड़की रौये थी, सै सौमज़दार आज़ि
पौड़ाइ दि बौरी तेज़ थी। तिरै आमा
पापा किसान थे। सै मैनत मज़दुरी
कौरियौ आपड़े पेटारौउँ पाळैण थे।



जौ सविता शादि लाइक उइ गोइ थी तै
लोग तिरै रिश्तौ कौरदै आयैण थै। पर
जेती थी लोग तिंरौ रिश्तौ कौरदै आयै
तिउँ सारिउँ रिश्वत री मांग की।



तिउँरौ एक रिश्तेदारेड वी एक रिश्तौ
लोडौ पर तिउँ वी 10 लाख रुपिया
औज़ि एक गाड़ी री मांग की।



सविता रे आमा पापा की बौरी पौरेशान
उइ गोये थे। सै कौर्जेइ निणे खी मज़बुर
उइ गोये थे। पर सौमाज़ रे डौर तिउँ
रोकदे रे थो लागी।



सविता की एशौ देखियौ बौरी दुखी
रौन्द लागी । तिंकै एशौ मैसुस औन्दै
लागी गोआौ थौ, कि मेरी जिन्दगी एक
बोज बौणी गोई ।



एक दूस तिंरी ईस्कुलोरी सैलिएड तिंआरी
बोलौ, कि गाउँ रै कुछ जुवान लोग
दहेज रै खिलाफ खि आवाज रैयै
उठान्दै लागी ।



एक दूस सविताइ बौद्ध हिम्मत कौइ
आपडै आमा पापा आरी बोलौ, कि
आउं शादी तैबेइ कौरुली जौ लौड़कौ
औज़ि तेसरै पौरिबार वाळै दहेज़ ना
नियै लै ।



ओैगौणिकै तै तिरै आमा पापाइ तिंरी
एज़ि बुशै शुणियौ डौर लागौ, पर तिउँ
आपडी बेटी सविया रौ साथ देणनै रौ
फैसलौ कियौ ।



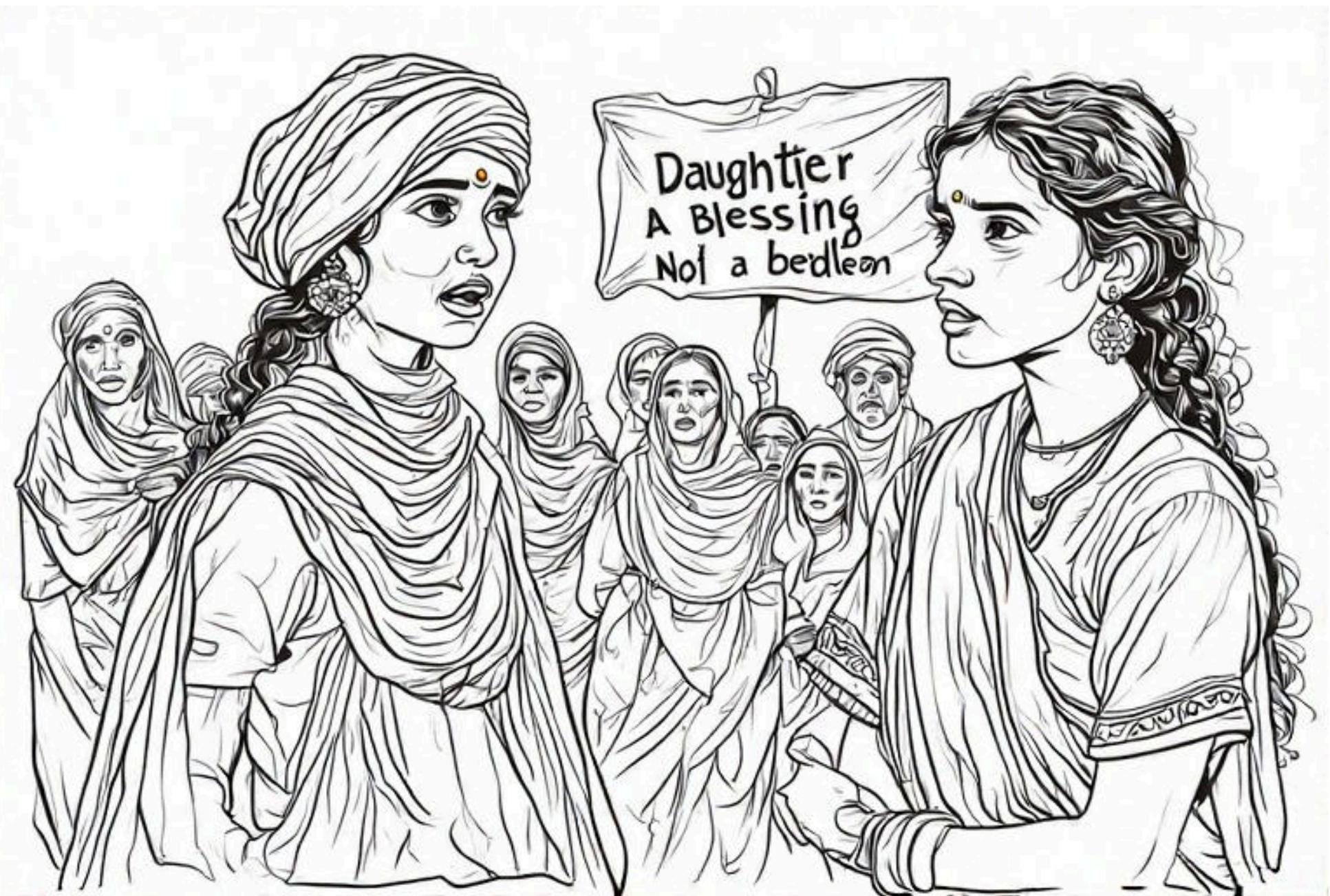
एक दूस सविता के रातल नौउँ रौ
लौड़कौ मिलौ, सेउ एक गुरज़ी थौ। सेउ
दहेज़ देणनौ औज़ि निणौ दुइंयाउँ रै
खिलाफ थौ।



राउल औज़ि तेसरै पौरिबार वाळै
सविता रै गौरे रिश्तो कौरदै आयै । तिंउं
सवितस रै आमा पापा आरी बोलौ
कि आम्के खालि लौड़की चाइं, दहेज़
ना चाइं ।



एज़ि कुशै पुरै गाउँ दि फैली, औज़ि लोग
हैरान उवै, कि बिना दहेज़ कौइ
बी शादी औइ सौकै, कुछु लोगु तै
एसरौ मज़ाक उड़ाओ, पर कुछु लोगु
बात मानी ।



सविता औज़ि रातल री शादी बौड़िया
कौइ उई। ऐबै तिउँ दुइंया ज़ौणौउँ
मिलियौ गाउँ दि दहेज़ रै खिलाफ
एक औवियान शुरु कियौ। औज़ि
बोल्दै लागै, बेटियै बोज ना औन्दै, सै
बौरदान औयैण।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें।

और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्द कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

,,,,,,,,, धन्यवाद ,,,,,,,

